सत्य का असर समाचार पत्र

Jksingh hardoi gmil com मोबाइल नंबर 9956834016

Sunday / 19-01-2025

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए जारी की एडवाइजरी

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

यह प्लेटफ़ार्म डेटा साइंस,साइबर सिक्योरिटी फुल

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाव। प्रो. एस के विश्वास,इस समय माहू कीट या चेपा का फसल पर होता है आक्रमण।

निष्पक्ष पोस्ट

कानपुर। उ.प्र। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

सूचकांक
76,619.33
-423.49

रविवार
कानपुर, 19 जनवरी 2025
वर्ष 68 अंक 19
आर.एन.आई. नं. 6984/58
रजि. मिस-2/CPM/03/KPHO/2013-14
मूल्य 2 रूपया पृष्ठ 8

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

कानपुर, 18 जनवरी (निस)। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

सत्य का असर समाचार पत्र

Jksingh hardoi gmil com मोबाइल नंबर 9956834016

Sunday / 19-01-2025

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए जारी की एडवाइजरी

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

राव आंबेडकर की आड़ में स्वार्थों का संधान | सान्या मलहोत्रा ने म्यूजिक वी

अंक :334 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,रविवार 19 जनवरी 2025 पृष्ठ : 08

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर, सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों , फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 212 कानपुर, 19 जनवरी, 2025 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये

> पढ़ें पेज 2 पर

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का

छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ. विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे–छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्षः 16 अंक : 208 कानपुर, रविवार 19 जनवरी 2025 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्यः 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

कानपुर । सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों पत्तियों फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

संडे
कानपुर
19 जनवरी • 2025
राष्ट्रीय सहारा
पृष्ठ 16, मूल्य ₹ 4.00
राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण
नगर संस्करण

ीण भारत
ता जायेगा
जमीन की
यं के नाम
नी से बेच
जमीन पर

योजना के
करने का
200 ग्राम
स्व ग्राम
ग्रौनी का
तर,ब्लाक
आयोजित
ार्यक्रम में
नशामुक्त
ा पंचायत
क सुरेन्द्र
ान, प्रभारी
कारी दीक्षा
स राजेश
ऋतु प्रिया

सरसों फसल को कीड़ों से बचाये किसान : प्रो. विश्वास

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है।

उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉ. विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। उन्होंने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण के लिये फसल में 20 मिली. नीम का तेल, एक मिलीलीटर तरल साबुन घोलकर छिड़काव करें। डॉ.विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

महानगर
वर्ष-4, अंक-122, पृष्ठः 17
मूल्यः एक रुपये

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

RNI/NO/UPHIN49792/16/4/2021

सच की अहमियत

कानपुर | रविवार, 19 जनवरी 2025 | कानपुर, लखनऊ, उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित

सूचना प्रसारण मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

दैनिक
उद्योग नगरी टाइम्स
E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com
सत्य ही कर्तव्य

वर्षः 14 | अंक :363 | कानपुर, रविवार 19 जनवरी 2025 | RNI UPHIN/2010/47220 | पृष्ठ : 4

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

अनवर अशरफ

कानपुर यू एन टी । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

'तपस्वी सरकार' महाराज 04 प्रदेश, 06 संस्करण
अमर भारती
एक उम्मीद
अंकः 23, पृष्ठः 12, मूल्यः 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com रविवार,19 जनवरी 2025, शक स

सरसों की फसल को बचाएं किसानः डॉ. विश्वास

कानपुर (अमर भारती ब्यूरो)। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानो के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों ,फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें।